माउंट आबू से ब्रह्मा द्वारा परमपिता शिव की श्रीमत और ब्रह्माकुमारियों द्वारा उसका उल्लंघन

माउंट आबू स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, जो कि दुनिया भर में ब्रह्माकुमारीज़ या ब्रह्माकुमारी संस्था के रूप में प्रसिध्द है, पिछले आधे दशक से भी अधिक समय से विश्व में यह प्रचार करता रहा है कि इसकी स्थापना स्वयं परमपिता शिव द्वारा एक सत्य धर्म तथा स्वर्ग या सतयुग की स्थापना के लिए की गई है। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की जाती रही और अभी भी की जा रही है कि शीघ्र ही इस पुरातन जगत का विनाश और नई देवताई दुनिया की स्थापना होने वाली है। वे संसार को यह भी बताते हैं कि इस कार्य के लिए निराकार परमात्मा शिव ने सन् 1936-37 में सिंध हैदराबाद के दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा को चुना था, किंतु सन् 1969 में, दादा लेखराज के देहावसान के पश्चात् ब्रह्माकुमारी संस्था की कथनी और करनी में महान अंतर नज़र आने लगा है।

ब्रह्माकुमारियों द्वारा जिस निराकार परमपिता परमात्मा शिव को इस अलौकिक परिवार के वास्तविक संस्थापक के रूप में बताया जाता है, उसी के संबंध में सन् 1969 के बाद यह बताया जाता है कि वह वापस सूर्य, चंद्र और तारागण से पार अपने परमधाम चले गए हैं और कभी-कभी माउंट आबू में ब्र.कु.गुल्ज़ार दादी के तन में आकर ज्ञान सुनाते हैं, किंतु सोचिये कि क्या जिस प्रकार अन्य धर्मपिताएँ अपने-अपने समय पर आए और दुनिया में द्वैतवाद या अनेकता फैलाकर चले गए, उसी प्रकार परमपिता परमात्मा शिव भी इस सृष्टि पर पर अवतरित होकर एक सत्य सनातन देवी-देवता धर्म और सतयुग की स्थापना का कार्य अधूरा छोड़ कर चले जाएँगे?

वास्तव में, सन् 1969 में, दादा लेखराज के देहावसान के पश्चात् निराकार परमपिता परमात्मा शिव वापस शांतिधाम नहीं गए, अपितु त्रिदेवों में से ब्रह्मा की की यादगार भूमि मानी जाने वाली राजस्थान को छोड़कर, विष्णु एवं महादेव शिव-शंकर की अवतरण भूमि मानी जाने वाली पुण्यभूमि उत्तर प्रदेश के एक छोटे

ग्राम कंपिला से गुप्त रूप से विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं, जिसे महाभारत महाभारत काल में पांडवों के लम्बे गुप्तवास का स्थान माना गया है।

दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा के साकार माध्यम के चले जाने के बाद उक्त गुप्तवास की जानकारी न होने के कारण और वर्तमानकालीन भगवान शिव-शंकर भोलेनाथ की प्रत्यक्ष पालना न मिलने के कारण, ब्रह्माकुमार-कुमारियों का यह परिवार मात-पिता विहीन हो गया और शनैः शनैः उस परिवार की परिस्थिति वही होती आई है, जो कि लौकिक दुनिया में माता-पिता के बिना अनाथ बच्चों की होती है। ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा उस श्रीमत का उल्लंघन करना प्रारंभ हो गया, गया, जो कि निराकार भगवान शिव ने दादा लेखराज के द्वारा माउंट आबू से ज्ञान मुरली के रूप में उन्हें दी थी।

सन् 1976 में ग्राम कंपिला, उत्तर प्रदेश से प्रत्यक्ष हुए निराकार शिव के दूसरे साकार माध्यम के द्वारा उन्हीं ज्ञान मुरलियों या सच्ची गीता के स्पष्टीकरण स्पष्टीकरण से अलौकिक ईश्वरीय परिवार में कर्मों के आधार पर कौरव तथा पाण्डव रूपी भाइयों के चेहरे प्रत्यक्ष होते हैं। वैसे तो ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा सूक्ष्म रूप में कई प्रकार से श्रीमत का उल्लंघन किया जाता है, किंतु प्रत्यक्ष रूप में हो रहे श्रीमत के कई प्रकार के उल्लंघन के कारण संसार में अनावश्यक रूप से परमात्म परिवार और ज्ञान की ग्लानि होती है।

1. परमपिता शिव की एक बड़ी श्रीमत है- 'माँगने से मरना भला'। किंतु, ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्यालय समेत सभी ब्रह्माकुमारी आश्रमों में दान-पात्रों के के रूप में अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप में ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों से धन या अन्य अन्य प्रकार की सहायता की याचना की जाती है, जो कि परमपिता शिव की उक्त उक्त श्रीमत का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन है। ब्रह्माकुमारी आश्रम के माउंट आबू स्थित मुख्यालय की तीर्थ यात्रा या किसी सार्वजनिक समारोह के नाम पर अधिकतर ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों से खुले आम चंदा माँगा जाता है। कई गरीब गरीब ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ मोटी रकम न जुटा पाने के कारण दादा लेखराज के

समय ईश्वर की कर्मभूमि रही माउंट आबू की यात्रा करने से वंचित हो जाते हैं या या उन्हें उचित सम्मान नहीं मिल पाता।
बाबा ने ता.4.4.72 पृ.3 की मुरली में बोला है- "माँगने से ब्रह्माकुमारियों को डूब मरना अच्छा है।"
→ "सेंटर्स पर जिज्ञासुओं से माँगते रहते हैं हमको यह चाहिए। बाबा हमेशा कहते हैं माँगो मत। ..... माँगना न है।" (मु. 25.1.72 पृ. 2)

2. परमपिता शिव ने मुरलियों में श्रीमत दी है कि मुख्यालय माउंट आबू के अतिरिक्त कहीं भी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों के लिए भवनों के निर्माण की आवश्यकता नहीं है, केवल किराये पर मकान लेते रहें और ईशरीय संदेश फैलाते रहें; क्योंकि नष्ट होने वाली इस पुरानी पतित दुनिया में संपत्ति बनाने का कोई अर्थ नहीं है, किंतु विश्व परिवर्तन की परमात्मा की इस घोषणा पर स्वयं विश्वास विश्वास न होने के कारण सन् 1969 के बाद ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों द्वारा दुनिया भर में विशाल अचलसंपत्तियों का निर्माण होने लगा और आज ब्रह्माकुमारी ब्रह्माकुमारी संस्था की संपत्तियों को देखकर किसी भी व्यक्ति को यह विश्वास नहीं नहीं होगा कि इस कलियुगी सृष्टि का विनाश होने वाला है।

3. भगवान शिव द्वारा यह श्रीमत दी गई है कि दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा का फोटो फोटो या चित्र नहीं रखना चाहिए; क्योंकि देह तो नश्वर है, पाँच तत्वों का बना हुआ है, किंतु दादा लेखराज के देहावसान के पश्चात् दुनियाभर के ब्रह्माकुमारी आश्रमों में तथा ब्रह्माकुमार- कुमारियों के घरों में दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा और सरस्वती के चित्र देखे जा सकते हैं। अब तो सार्वजनिक आयोजनों के निमंत्रण-पत्रों में ब्रह्मा और सरस्वती के चित्रों के स्थान पर वर्तमान प्रशासिकाओं के चित्र छपने लगे हैं, जो कि श्रीमत का सरासर उल्लंघन है। वास्तव में परमपिता शिव का कहना है कि जीते-जागते मुकर्रर साकार शरीर रूपी रथ के द्वारा निराकार परमपिता को याद करना राजयोग की सही प्रक्रिया है, ठीक वैसे ही जैसे सोने की डिबिया में रखे हीरे को देखा जाता है; परन्तु ब्रह्माकुमारी आश्रमों में सिर्फ

निराकार ज्योतिर्बिंदु की याद सिखाई जाती है। साकार में आये शिवशंकर भोलेनाथ के पार्ट को नजरअंदाज किया जा रहा है।

➔ "इनका (ब्रह्मा का) फोटो भी तुम मत रखो। कोई भी देहधारी (मम्मा, बाबा, दीदी, दादी आदि) का फोटो नहीं रखना है।" (मु. 27.3.86 पृ.1)

➔ "ब्रह्मा का नाम भी न लो। इसलिए बाबा-मम्मा का फोटो रखना भी पसन्द नहीं करते। कब-कब ख्याल आता है सभी फोटो निकाल दें। बाकी त्रिमूर्ति, झाड़ तो है ही। इनके द्वारा बाप पढ़ाते हैं। इनको थोड़े ही याद करना है। इनका फोटो तो कब लो नहीं। नहीं तो फँस मरेंगे। फोटो भी क्यों रखें? भक्त लोग अपने गुरु का चित्र रखते हैं। यह कोई गुरु थोड़े ही है।" (मु.8.3.69 पृ.3)

➔ "बाबा समझते हैं इनमें अज्ञान है, जो फोटो के लिए जिद करते हैं। ..... यह देह तो मिट्टी है। इनका फोटो क्या देखना है? भक्तिमार्ग की जो रसम है ज्ञानमार्ग में हो न सके।" (मु.13.11.70 पृ.2)

4. ब्रह्माकुमार-कुमारियों को यह श्रीमत भी मिली हुई है कि भगवान को भोग चढ़ाना भक्तिमार्ग की तरह है। ज्ञानमार्ग में इसकी आवश्यकता नहीं होती है। केवल भगवान की याद में शुध्द भोजन पकाना और भगवान की याद में भोजन परोसना या खाना ही पर्याप्त है, जिससे भोजन का शरीर पर अच्छा असर भी पड़ता है, किंतु ब्रह्माकुमारी आश्रमों में तथा उनको देखकर ब्रह्माकुमार-कुमारियों के के घरों में भी आडंबरपूर्ण तरीके से भगवान को भोग चढ़ाया जाता है। भोग के नाम पर अनुयायियों से पैसे भी वसूले जाते हैं। शादी करके शारीरिक सुख का भोग करना या नश्वर शरीर का जन्मदिन मनाना इत्यादि ब्रह्माकुमारी आश्रम के सिध्दांतों के अनुसार नहीं है, किंतु अधिकतर ब्रह्माकुमारी आश्रमों में आए दिन शादी या जन्मदिन की खुशी में भगवान को भोग चढ़ाया जाता है। वास्तव में आत्मा तो अजर-अमर है, इसलिए उसे सदैव प्रसन्न होना चाहिए, न कि केवल एक दिन।

➔ "यह भोग आदि तो न ज्ञान है, न योग है। इन बातों से कोई कनेक्शन नहीं है।" (मु.18.7.70 पृ.4)

5. निरहंकारी भगवान शिव द्वारा ज्ञान मुरलियों में घोषणा की गई है कि वो तो केवल एक ओबीडियेंट सर्वेंट है। दादा लेखराज के जीवित रहने तक ब्रह्माकुमारी आश्रमों में किसी को कोई ओहदा या पद-मान-मर्तबा नहीं मिला हुआ था, किंतु उनके देहावसान के पश्चात् इन आश्रमों के प्रशासकों तथा वरिष्ठ सदस्यों ने विभिन्न उपाधियाँ धारण कर ली हैं, जैसे- मुख्य प्रशासिका, सह प्रशासिका, निदेशक, निदेशिका, जोनल इन्चार्ज इत्यादि। यह उसी तरह है जैसे भक्तिमार्ग में तथाकथित मनुष्य गुरु परमपूज्य श्री श्री 108 जगद्गुरु शंकराचार्य या वाचस्पति, सरस्वती इत्यादि उपाधियाँ धारण कर लेते हैं। वास्तव में आध्यात्मिक साधना करने वालों को ऐसी उपाधियों की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

6. परमपिता शिव की श्रीमत के अनुसार ब्रह्माकुमारी आश्रम जिज्ञासुओं के लिए सारा दिन खुले होने चाहिए, ताकि कोई भी ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर सके, किंतु अधिकतर ब्रह्माकुमारी आश्रम दिन में आराम के नाम पर कई घंटों के लिए बंद कर दिये जाते हैं।

7. इसी प्रकार, भगवान शिव की श्रीमत है कि ब्रह्माकुमारी आश्रम धर्म, जाति, भाषा इत्यादि के भेदभाव के बिना सभी के लिए खुले होने चाहिए। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का अर्थ ही यह है कि यह सारे विश्व के लिए है, लिए है, किंतु जैसे ही किसी ब्रह्माकुमारी आश्रम की संचालिका को पता चलता है कि किसी अनुयायी ने कंपिला, उत्तर प्रदेश स्थित आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिपादित शिव-शंकर भोलेनाथ के दिये हुये ज्ञान का श्रवण श्रवण किया है, तो उन अनुयायियों को ब्रह्माकुमारी आश्रमों में प्रवेश करने पर रोक लगा दी जाती है तथा उन्हें पाण्डवों की तरह बहिष्कृत कर दिया जाता है। दुनिया के किसी भी धार्मिक स्थल में इस प्रकार अपने ही धर्म के अनुयायियों के प्रवेश पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाता है। भारतीय संसद तथा भारत सरकार द्वारा आयकर में विशेष छूट तथा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा सस्ती दरों पर या मुफ्त जमीन प्राप्त करने वाली ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा अपने ही अनुयायियों के के साथ इस प्रकार का व्यवहार आश्चर्यजनक है।

8. आज तक जितने भी धर्म हुए हैं, उनके अनुयायियों द्वारा अपने धर्म ग्रंथ को परम आदर दिया जाता है, उसके साथ कोई छेड़- छाड़ नहीं की जाती है, किसी शब्द या वाक्य को काटा या संशोधित नहीं किया जाता है, किंतु बड़े आश्चर्य की बात है कि दादा लेखराज के द्वारा सुनाई गई भगवान शिव की वाणी मानी जाने वाली ज्ञान मुरलियों में सन् 1969 से कई परिवर्तन किये गए हैं, विशेषकर फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश स्थित आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रगति को को रोकने के दृष्टिकोण से। यह उन हज़ारों ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए आश्चर्य आश्चर्य ही नहीं, अपितु दुःख का भी विषय है कि स्वयं भगवान शिव की वाणी के साथ छेड़छाड़ की जाती है। वास्तव में भगवान की यह वाणी विश्व की सारी आत्माओं के लिए पथ-प्रदर्शक है, अविनाशी सुख-शांति पाने का माध्यम है। अतः कुछ देहधारी गुरुओं द्वारा इसमें मनमत से संशोधन किया जाना एक दुखद बात है।

9. जब तक दादा लेखराज उर्फ ब्रह्मा बाबा जीवित थे, तब तक निराकार परमपिता शिव उनमें प्रवेश कर अपनी दिव्य दृष्टि से अपने सम्मुख बैठे अलौकिक बच्चों को आत्मानुभूति कराते थे, उनमें शक्तियाँ भरते थे। उनके जीवित रहने तक कोई अन्य ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ राजयोग के नाम पर अन्य ब्रह्माकुमार-कुमारियों को इस प्रकार दृष्टि नहीं देते थे, किंतु दादा लेखराज के निधन के बाद विश्वभर के ब्रह्माकुमारी आश्रमों में ब्रह्माकुमार- कुमारियों द्वारा अन्य अन्य ब्रह्माकुमार-कुमारियों को दृष्टि दी जाती है, जो कि गलत है; क्योंकि स्वयं पूरी तरह आत्माभिमानी न होने तथा उनमें परमपिता शिव की प्रवेशता न होने के कारण वे किसी को दृष्टि देकर पावन बना नहीं सकते। पतित आत्माओं के बीच इस प्रकार दृष्टि के लेन-देन से सूक्ष्म रूप में देहअभिमान बढ़ता है, न कि घटता है। वास्तव में निराकार भगवान के साकार जीवन्त माध्यम के द्वारा ही उस परमपिता को याद करना राजयोग की सही प्रक्रिया है।
→ "कोई से आँख मिलाई यह भी शैतान बने। आँखें मिलाने वालों की दिव्य चक्षु निकल जाती है।" (मु.2.5.73 पृ.2)

➔ "यहाँ तो सच्चे साफ दिल चाहिए। ऐसे नहीं, घर छोड़ आकर फिर ब्राह्मण कुल कुल में रह कोई न कोई से आँख लड़ाती रहो।" (मु.9.2.73 पृ.2)

➔ "अक्सर करके स्त्री-पुरुष की तो विकार की दृष्टि होती है। ..... कोई तरफ तरफ कुदृष्टि जाये तो उसके आगे खड़ा भी नहीं होना चाहिए। एकदम चला जाना चाहिए।" (मु.28.1.90 पृ.1)

➔ "ऐसे मत समझो यहाँ जो आते हैं उन्हों की विष से बुध्दि निकल जाती है। एक दो को देखते हैं तो अंदर तूफान चलता गंदे बनने लिए।" (मु.19.9.73 पृ.2)

10. परमपिता शिव की एक श्रीमत यह भी है कि ईश्वरीय सेवा अर्थात् दुनियावालों को आत्मा, परमात्मा तथा सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का ज्ञान देना तथा परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य, किंतु गुप्त अवतरण का संदेश घर-घर तक पहुँचाने का कार्य कम से कम खर्चे में होना चाहिए। इसमें किसी प्रकार का आडंबर या प्रदर्शन नहीं होना चाहिए। किंतु, सन् 1969 में दादा लेखराज के देहावसान के पश्चात् ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा इस लाभकारी और कल्याणकारी नियम का अनेकों बार उल्लंघन किया गया है। हाल के वर्षों में तो ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा लाखों या करोड़ों रुपये खर्च करके कई सार्वजनिक कार्यक्रम किये गए गए हैं, जिनके प्रचार के साधनों में परमपिता शिवशंकर भोलेनाथ के स्थान पर ब्रह्माकुमारी संस्था के संचालिकाओं के चित्रों का प्रचार और प्रदर्शन बड़े-बड़े पोस्टर पोस्टर बनाकर किया जा रहा है, जो कि एक दुखद विषय है।

11. परमपिता शिव की श्रीमत तथा ब्रह्माकुमारी संस्था का यह घोषित सिध्दांत है है कि काम विकार महाशत्रु है, जैसा कि गीता में भी लिखा गया है - इंद्रियों पर विजय पाने से जगत पर विजय पाई जा सकती है। अत: जनसंख्या निमंत्रण के नाम पर कामेन्द्रियों के सुख को बढ़ावा देने वाले गर्भ निरोधक उपायों से इस संस्था का कोई सरोकार नहीं होना चाहिए। परमपिता परमात्मा शिव द्वारा ब्रह्माकुमारी आश्रमों को रूहानी अस्पताल की संज्ञा दी गई है, किंतु ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा माउंट आबू में जो अस्पताल खोला गया है, वहाँ सरकारी नियमों के अनुसार गर्भ निरोधक साधन भी मिलते हैं, जो कि ईश्वरीय नियमों के खिलाफ

है। परमपिता शिव के अनुसार भ्रष्ट कामेन्द्रियों के भोग से संतान उत्पन्न करना, भारत की योगबल द्वारा संतान उत्पत्ति की सनातन पध्दति के खिलाफ है।

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा परमपिता शिव की श्रीमत के उल्लंघन के उदाहरण उदाहरण प्रस्तुत करने का उद्देश्य उनकी ख्याति को कम करना नहीं है, अपितु भगवान शिव की श्रीमत के महत्व की महसूसता कराना है, ताकि परमपिता परमात्मा शिव द्वारा स्थापित ईश्वरीय अलौकिक परिवार के नैतिक पतन को रोका रोका जा सके और परमपिता शिव की श्रीमत के पालन से सारे विश्व को सुख-शांतिमय स्वर्ग बनाया जा सके। स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा।

ओम शांति